शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारतीय समकालीन कला के चित्रकार अतुल डोडिया का योगदान

प्राप्तिः 23.02.2024
स्वीकृतः 25.03.2024

22

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंटएंड टेक्नोलॉजी
देहरादून (उत्तराखण्ड)
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

मोहित वर्मा
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉज, देहरादून (उत्तराखण्ड)

सारांश

समकालीन कला वर्तमान की कला है जो इक्कीसवी सदी से निर्मित होती है, रामकला का तात्पर्य उस कला से है जो वर्तमान में एक विशेष आंदोलन से जुडा है और प्राचीन परम्पराओ और रुचि के अनुनिरन्तर नये–नये प्रयोग हो रहे है।

आज के समय में दुनिया बड़ी तेजी से बदल रही है उसके सामाजिक मूल्य, सोच, कार्य, व्यवहार आदि सब कुछ बदल गया है। तो फिर कला कैसे पिछे रहे सकती है। समकालीन कला भी इसी का परिणाम है, भारतीय कला में हुए उद्भूत बदलाब ने आज के समय में कला को एक नए पहलू पर पहुंचा दिया है अब तक कला ने बहुत लम्बा सफर तय किया है जिसमे कला, अलग–अलग समय में, नए – नए माध्यम व तकनीक से जुड़ती रही है इसी समकालीन कला के कलाकार अतुल डोडिया का नाम उल्लिखि है जिन्होने समकालीन कला के समय नई सोच और सफलता को हासिल किया इन्होने केवल कागज जैसी परपंरागत मधिमो के अलावा वे ऐसी सतहों पर भी काम करते रहे है जिनके बारे मे पहले कभी किसी ने सोचा तक नहीं था, उदाहरण के लिए उनकी दुकान के शटर पर की गई पेटिंग को ले सकते है और डोडिया की बहुत सी जल रंग पेटिंग महात्मा गांधी के ऊपर केन्द्रित रही है डोडिया कि सोच, काम करने का तारिका आदि से मुझे बहुत कुछ सिखने को मिला है।

मुख्य बिन्दु

समकालीन, कला, समाज, अतुल डोडिया।

एक समकालीन कलाकार, जो पेंटिंग और इंस्टालेशन जैसे माध्यमों में काम करता है, डोडिया को फोटोरियलिज़्म के विशेष आह्वान और लकड़ी के अलमारियाँ और रोलर शटर के बहुमुखी उपयोग के लिए जाना जाता है। डोडिया का जन्म मुंबई में घाटकोपर, मुंबई के एक मध्यमवर्गीय गुजराती परिवार में हुआ था, जहां वह अब भी रहते हैं। उन्होंने 1982 में सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट से पेंटिंग में बीएफए प्राप्त किया और 1991 से 1992 तक उन्होंने इकोले में अध्ययन किया।

डोडिया का काम भारत के समृद्ध और खंडित सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य के साथ–साथ कला के इतिहास को भी छूता है। उनका दृश्य मुहावरा दृश्य संस्कृति के साथ उनके व्यापक संबंध और अध्ययन से प्रेरित है, जिसमें दूरदर्शन शो से लेकर वैश्विक कला सिनेमा, हाथ से पेंट किए गए फिल्म पोस्टर से लेकर विज्ञापन बिलबोर्ड और लोकप्रिय राजनीतिक और धार्मिक आइकनोग्राफी शामिल हैं।

डोडिया एक ऐसे कलाकार हैं, जिन्होंने अपनी कई प्रदर्शनीया की, और लोगों के अपने काम करने के तारीको से चौकाया डोडिया कैनवस और कागज जैसे परम्परागत माध्यमों के अलवा वे ऐसी सतहों पर भी काम करते है रहे हैं जिनके बारे में पहले कोई सोचता भी नहीं था। उदाहरण के लिए हम उनकी दुकानों के शटर पर की गई पेंटिंग को ले सकते है। उन्होंने ऐसे–ऐसे कार्य किए है कि उस पर अलग से बात करने की आवश्यकता है। शुरू में फोटोरियलिस्ट रिप्रोडक्शन के मोड में काम करते हुए, डोडिया का प्रस्थान का महत्वपूर्ण बिंदु उनकी पेंटिंग द बॉम्बे बुकेनियर (1994) के माध्यम से आया, जिसमें उन्होंने बॉलीवुड फिल्म बाजीगर (1993) के पोस्टर पर अपने चित्र को प्रतिस्थापित किया। इस व्यंग्यपूर्ण पुनर्संरचना में, उनके काले धूप के चश्मे में भूपेन खाखर और डेविड हॉकनी की छवियां प्रतिबिंबित होती हैं, जो उनके लिए प्रेरणादायक व्यक्ति थे। 2001 में, टेट मॉडर्न में गीता कपूर और आशीश राजाध्यक्ष द्वारा आयोजित प्रदर्शनी सेंचुरी सिटी में रोलर शटर पर उनके चित्रों की पहली पुनरावृत्ति देखी गई। दुकानों के सामने और मुंबई की हलचल भरी गतिविधि को उजागर करते हुए, रोलर शटर के तत्काल खुलने और बंद होने की गति ने खुद को दंगों (1992–1993) के दौरान मुंबई में कर्फ्यू के लिए एक तैयार रूपक के रूप में भी पेश किया। मिसिंग सीरीज (1990 के दशक के अंत), डेड एंसेस्टर्स (2012), पुलिस क्रैकडाउन, बॉम्बे, जुलाई, 1930 (2015) और स्टैमर इन शेड (2020) जैसी परियोजनाओं में मौजूद रोलर शटर कई संदर्भों पर आधारित हैंय पाब्लो पिकासो, विंसेंट वान गॉग, पीट मोंड्रियन, मार्सेल ड्यूचौम्प और एडवर्ड हॉपर जैसे विहित कलाकारों की पेंटिंग से लेकर राजा रवि वर्मा की ओलियोग्राफ तक।

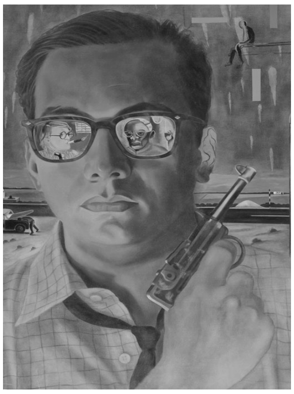

अतुल डोडिया की पहचान सन 1999 में महात्मा गांधी के जल रंगों के चित्र के कारण हुई थी इन्होंने जलरंग में बहुत सी पेंटिंग बनाई थी जो कि महात्मा गांधी के ऊपर केंद्रित रही थी डोडिया ने समाज की कई दयनीय और गरीब वर्णों को दर्शाती जल रंग चित्रों में श्रृंखला बनाई जैसे प्लंबर मुंशी पेंटर आदि। इन्होंने 1999 में गांधी जी पर एक पूरी प्रदर्शनी लगाई थी जिसमें जल रंग चित्रों की श्रृंखला तैयार की जिसका शीर्षक था अहिंसा का एक कलाकार सन 2000 में इन्होंने भी विभिन्न

मधियमो में रोलिंग शटर पर कार्य शुरू किया था। अतुल कहते हैं कि गांधी जी के जीवन में सौंदर्य शास्त्र की गहरी भावना थी। चाहे वह खादी हो, साबरमती आश्रम की वास्तुकला, उपवास सहयोग या चरखा उनके पास चीजों को करने का एक अच्छा कलात्मक तरीका था।

डोडिया ने लॉकडाउन के समय 200 से अधिक पेंटिंग बनाई और वह अभी भी कई प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। डोडिया का कहना है कि प्राकृतिक दुनिया जलवायु के साथ हमारा रिश्ता अहम है हालांकि जीवन और आपस की घटनाओं से अलग रहना मुश्किल होता है डोडिया के कुछ ऑयल पेंटिंग का कलेक्शन हाल ही में वधेरा आर्ट गैलरी में प्रदर्शित हुआ है। यह उनके आर्ट इन टच का चौथा संस्करण है मुंबई में जन्मे, पड़े और रहने वाले कलाकार कहते हैं शहर के हर एक हिस्से में मेरी सोच को प्रभावित किया है। फिल्मों की शौकीन डोडिया 12 साल की उम्र में तय नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें पेंटर बनना चाहिए या फिल्म निर्माता। वह कहते हैं मैं कलाकारों की हर एक खासियत से प्रेरित होता हूं। मेरे काम में आप इसकी झलक देख सकते हैं।

समकालीन भारतीय कला के ग्रैंड मास्टर अतुल डोडिया पर पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माता कमल स्वरूप का 55 मिनट का अतुल डोडिया के बहुमुखी करियर के विकास को दिखाता है। जिसमें डोडिया कथाकार और कहानीकार बन जाते है फिल्म को नई दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में पीएसबीटी के ओपन फ्रेम फेस्टिवल में प्रदर्शित किया गया था। यह एक अनुभवी और संवेदनशील रूप से संभाले गए सहयोग का परिणाम है और कलात्मक अंतर्दृष्टि के लिए मूल और सुसंगत कार्य के रूप में उभरा है डोडिया के रूप में डोडिया स्वाभाविक सिनेमाई रूप से चतुर है क्योंकि वह एक गहरी तीव्रता का खुलासा करते हैं जो नेत्रहीन रूप से अचेत कर देता है।

इसी के साथ हम इनके चित्रों की बात करे तो जिसमें डोडिया ने अपने चित्र में फिल्म के पोस्टर का चित्र दर्शाया जिसका नाम गब्बर ऑन गैम्बोगे है, जो सन 1997 में बनाई गई। इस पेंटिंग के केंद्र में एक बंदूक रखने वाला व्यक्ति खलनायक गब्बर है जो सन 1975 की भारतीय की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्म शोले फिल्म में दिखाई देता है ,मनोरंजन नृत्य और संगीत के अलावा कई भारतीय फिल्म सितारे इसमें आनंदित होते दिखाई देते हैं। इस पेंटिंग में गब्बर मौत की लाक्षणिक छवियों और फिल्म के बेहद हिंसक दृश्यों से घिरे हुए हैं। प्रार्थना करने वाले बच्चे फिल्म या जनता के विपरीत एक निर्दोश प्रार्थना का प्रतीक हो सकते हैं, जो हिंसा के बावजूद फिल्म की आंख मूंदकर प्रशंसा करते हैं। फिल्मों और विज्ञापनों से लोकप्रिय और रोजमर्रा की छवियों

को मिलाकर, अतुल डोडिया भारतीय समाज में विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं। ''गब्बर ऑन गैम्बोंगे (गहरा सरसों का रंग)'' दर्शकों को अपने मजबूत पैलेट से अभिभूत करता है, ठीक उसी तरह जैसे फिल्म मुंबई के महान शहर के चारों ओर होर्डिंग करती है।

इसी के साथ उनकी बनाई गई कई पेंटिंगो में से एक महालक्ष्मी है। जब डोडिया से सभी पेंटिंग विषयों के पीछे उनके मूल प्रोत्साहन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने साझा किया की कला अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है और मेरे कलात्मक विशय को आमतौर पर वास्तविकता जीवन की स्थितियों के प्रेरित होते हैं। मेरी तस्वीर जिसमें मैंने एक फोल्डेबल शॉप शटर पर देखी देवी लक्ष्मी मां का चित्र खींचा है जो दिखता है कि कैसे हम अपनी लक्ष्मी अपनी बेटियों को दहेज की गंदगी में खींचकर नुकसान पहुंचाते हैं। रोलिंग शटर पर मेरी पेंटिंग कलाकृतियां पर कर्षण पैदा करती है लेकिन दर्शकों के लिए एक अनुभव और बातचीत विकसित करती है।

इसी तरह डोडिया की बनाई गई पेंटिग काबुल की महिला जो सन 2001 में बनाई गई जिसका साइज 183x122 सेमी था। इस चित्र में काबुल की महिला नई सहस्राब्दी के मोड़ पर अफगानिस्तान में रहने के बारे में एक काम है। कलाकार इतिहास और संसाधनों से समृद्ध एक देश को याद करता है जो युद्ध के बोझ तले दब गया है। एक बुजुर्ग महिला की एक आकृति, जिसका अधिकांश काला बुर्का उतार दिया गया है, दीवार के कागज की एक बहुत ही सजावटी पृष्ठभूमि पर बैठती है। उसके शरीर को त्वचा और हड्डियों के रूप में प्रकट किया गया है, जो उत्पीड़न और गंदगी का प्रतिनिधि है जो शहर के लिए स्थानिक बन गया है। डोडिया का काम शरणार्थी की दुर्दशा की एक शक्तिशाली याद दिलाता है। ओर इसी तरह डोडिया ने कई बोहोत से चित्रो का निर्माण किया डोडिया अब भी अपने महान चित्रों के लिए जाने जाते हैं वह अपने 1980–82 के वर्षों को याद करते है जब वह मुंबई के सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट में पढ़ रहे थे। वह खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि प्रभाकर बर्वे, तैयब मेहता, गिवे पटेल, सुधीर पटवर्धन और अकबर पदमसी जैसे कलाकारों ने उनके लिए हमेशा अपने दरवाजे खुले रखे। सन 1964 में डोडिया ने अंजू डोडिया से शादी की। अंजू डोडिया भी एक चित्रकार है। जिन्होंने भी 1986 में जेजे स्कूल ऑफ आर्ट से ही कला शिक्षा प्राप्त की। अंजु डोडिया स्वयं एक समकालीन चित्रकार के तौर पर जानी जाती है। यह जो चित्र चित्रित करती है जो चित्र विद्रोह व आतंरिक जीवन और बाहरी वास्तविकता के बौध संघर्ष का पता लगाने के लिए आत्मचित्र रूप का उपयोग करती है। डोडिया और अंजू आज भी मुंबई में रहते हैं और काम करते हैं।

निष्कर्ष

आज, डोडिया को देश के सबसे प्रतिष्ठित कलाकारों में गिना जाता है, लेकिन सिनेमा के प्रति आकर्षण और प्रशंसा जो उनके बचपन में पैदा हुई थी, अभी भी कायम है और उनकी रचनात्मक जगह को पोषित कर रही है। उन्होंने अक्सर अपनी कला में सिनेमा के प्रति अपने प्यार को दोहराया है, डोडिया कला के एक महान काम में बदलने की बाद की क्षमता की प्रशंसा करते हैं। "उदाहरण के लिए, सत्यजीत रे की अपु त्रयी को देखें। यहां काम पर एक अलग दृष्टिकोण और स्वभाव है, डोडिया यह जानने में रुचि रखते हैं कि क्या होता है जब वह अपने चित्रों में किसी अन्य माध्यम से छवियों का उपयोग करते हैं – जो कला का एक काम भी है। ऐसा करके, वह अपने दर्शकों को लंबे समय तक उलझाए रखना पसंद करते हैं। डोडिया का काम भारत के समृद्ध और खंडित सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य के साथ–साथ कला के इतिहास को भी छूता है। उनका दृश्य मुहावरा दृश्य संस्कृति के साथ उनके व्यापक संबंध और अध्ययन से प्रेरित है, जिसमें दूरदर्शन शो से लेकर वैश्विक कला सिनेमा, हाथ से पेंट किए गए फिल्म पोस्टर से लेकर विज्ञापन बिलबोर्ड और लोकप्रिय राजनीतिक और धार्मिक आइकनोग्राफी शामिल हैं। डोडिया कला में अपनी विविधता के लिए जाने जाते हैं लेकिन इस श्रृंखला के लिए उन्होंने यथार्थवाद की ओर लौटने का फैसला किया, जो उनके पहले के काम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। ''इसी तरह मैंने इन फिल्म चित्रों को अपने तरीके से फिर से रंगने के बारे में सोचा।''

संदर्भ

1. kalavimarsha-blogspot-com/2014/10/atul&dodiya-html\m¾1
2. mapacademy-io
3. Saatchigallery-com
4. artsandculture-google-com/asset/gabbar&on&gamboge&atul&dodiya/AwE57ncqrnZ5mA
5. Aesthetics-wordpress-com